रसूखदार

उस छोटे कस्बे के बीच से बहती करवन नदी में भले ही ताजे पानी की कलकल न रही हो, मगर उस कस्बे के कुछ लोग आज भी नदी के ताजे पानी जैसे स्वच्छ और निर्मल हृदय के हैं।

उनमें से ही एक नाम है चौधरी राजेन्द्र सिंह, चौधरी साहब को वैसे तो उनके मूल नाम से कम ही लोग पहचानते हैं लेकिन चौधरी साहब के नाम से उन्हें कस्बे के अधिकतर लोग जानते हैं। जानते भी क्यों ना? चौधरी साहब कस्बे के रसूखदार जो ठहरे।

मेरा परिचय चौधरी साहब से बहुत पुराना है इतना पुराना कि जितना पुराना मैं खुद हूँ। मुझे बचपन में तो इस बात से कोई लेना देना ही नहीं था, कि चौधरी साहब हैं क्या? मैं तो अपनी बाल जिज्ञासा

के साथ पहुँच जाता उनके घर और दिन भर वहीं खेलता और खाता।

वह अपनी ही तहसील में रजिस्ट्रार कानूनगो के पद पर आसीन लेखपाल जिला संघ के पूर्व अध्यक्ष। उनकी अपने कार्य के प्रति ईमानदारी ही उनकी रसूखदारी को और बढ़ा रही थी।

अब मैं बारहवीं में पढ़ रहा था और समाज दुनियाँ को समझने की समझ मुझमें आ गई थी। समाज ही वास्तविकता में हमारा आईना है। समाज हमें वैसा बताता और दिखाता है

साहित्य रत्न जुलाई2023

जैसे वास्तव में हम हैं। क्योंकि दीवार पर टंगा आईना हमारे उस बहरुपियेपन को दिखाता है जिसे हम उसमें देखना चाहते हैं मगर समाज हमारे सामने प्रस्तुत करता है हमारा असल चेहरा वास्तव में चौधरी साहब ने जो चेहरा देखा था वह समाज के आईने में देखा था। जिस कारण वह एक मानवीयता से परिपूर्ण स्वरुप था।

मेरा चौधरी साहब के घर लगभग प्रत्येक दिन आना जाना लगा रहता उनका बेटा अरुण मेरे साथ ही पढ़ता। जिस कारण मैं उनके घर का एक हिस्सा हो गया घर की लगभग सभी बातें मुझे मालुम चल जाती। कस्बे के दूसरे छोर पर बना उनका घर मुझे हमेशा सकून देता जब मैं अपने घर में अकेला महसूस करता बस पहुँच जाता उनके घर। यह सिलसिला लगभग आज भी ज्यों का त्यों जारी है। चौधरी साहब का अपने काम के साथ-साथ परिवार और समाज के साथ समायोजन बहुत गजब का था। कभी-कभी किसी काम से मेरा तहसील पर भी आना जाना होता तो में चौधरी साहब के ऑफिस में जाकर घण्टों बैठा रहता और उनकी अपने काम के प्रति निष्ठा और ईमानदारी देखता वह अपने काम से बहुत खुश रहते। बस उन्हें इसी बात का डर रहता कि कभी कोई उनके किए काम पर प्रश्न चिन्ह ना लगा दे?

सरल और शान्त स्वभाव के चौधरी साहब को मैंने गुस्सा करते कभी नहीं देखा बात कितनी भी बड़ी हो वह शान्त ही रहते वह चाहे घर हो या

ऑफिस्। एक बार जब मैं उनके ऑफिस में बैठा था तभी एक बूढ़ा व्यक्ति जिसकी उम्र लगभग 70 साल होगी हाथ में एक पुराना नक्शा लिए वहाँ पहुँचा चौधरी साहब ने इसारे से उसे पास में ही कुर्सी पर बैठ जाने को कहा क्योंकि वह खुद किसी पत्रांक में कुछ दर्ज कर रहे थे लगभग 10 मिनट बाद जब वह अपने काम से फ्री हुए तो उन्होंने उस बूढ़े व्यक्ति से आने का कारण पूछा व्यक्ति ने अपने हाथ का नक्शा उनके सामने खिसका दिया नक्शा देखते ही चौधरी साहब ने

नक्शे पर अंगुली रखकर खेतों की मेड़बंदी समझाई और वह व्यक्ति सब कुछ ऐसे जानते हुए जैसे नक्शा उसी व्यक्ति ने खुद बनाया है वहाँ से चला गया तब उन्होंने मुझसे आने का कारण पूछा तो मैंने अपने कार्य की इच्छा व्यक्त कर दी वह तुरंत खड़े हुए और एक दूसरे ऑफिस में जाकर बोले "थै हमारौ ही बालक है जाकौ जौ काम है भाई करि दैओ" लगभग 20 मिनट बाद मुझे जो कागज़ चाहिए था मुझे मिल गया। उनका अपने पास काम से आये हर एक किसान के प्रति ऐसा व्यवहार होता जैसा कि शिशु के साथ उसकी माँ का होता है। उनकी नजरों में हमेसा किसान एक अबोध बच्चे जैसा रहा जिसे सुरक्षित रखने के लिए अटूट प्रेम की आवश्यकता होती है। उनका मानना था कि किसान तभी सुरक्षित है जब हम उसके साथ हैं क्योंकि अगर हमने उसे उसकी बात समझा दी तो वह

छोटी-छोटी बातों को लेकर होने वाले बड़े-बड़े विवादों से सदैव बचा रहेगा।

चौधरी साहब की काम करने की प्रक्रिया को देखते हुए मुझे 25 वर्ष हो गए। मैंने उन्हें इतने लम्बे समय में कभी अपने ऑफिस के लिए घर से देर से जाते नहीं देखा। उनको मैंने जैसा देखा था, वह आज भी बिल्कुल वैसे ही हैं शान्त और शालीन। उनके पास बैठ कर एक अजब सा अहसास जाग उठता है अपने काम के प्रति प्रेम का।

सुरजीत मान जलईया सिंह